M.A (P) Hindi — डॉ० जोगेश
Paper — प्रेमचन्द

Q. कर्मभूमि और गाँधीवाद

भूमिका :—

मुंशी प्रेमचन्द विरचित उपन्यास 'कर्मभूमि' स्वाधीनता आन्दोलन की गहराई और प्रसार का उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने भारतीय जनमानस को तत्कालीन यथार्थ के दर्शन करवाकर न केवल सचेत किया है, अपितु संगठित होकर अंग्रेजों के ही नहीं अपितु अपने समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति भी संघर्ष करने को उद्वेलित किया है। 'कर्मभूमि' के रचनाकाल में भारतीय जनमानस पर गाँधी जी के विचारों का व्यापक प्रभाव पड़ चुका था और प्रेमचन्द भी उससे अछूते न थे। 'कर्मभूमि' पर गाँधीवाद के प्रभाव का अध्ययन करने से पहले गाँधीवाद को समझना अति आवश्यक है —

गाँधीवादी दृष्टिकोण :—

गाँधीजी ने किसी नवीन विचारधारा, जीवन दर्शन, तत्व दर्शन या परंपरा का प्रतिपादन नहीं किया था। यदि सही ढंग से देखा जाए तो गाँधी के उन विचारों, कर्मों आदि के योग का नाम ही गाँधीवाद है जो भारत की आध्यात्मिक जीवन, दृष्टि, सांस्कृतिक परम्परा आदि से संबंधित है और ये परम्पराएँ शताब्दियों से सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा, त्याग, सहिष्णुता, आत्मसंयम आदि नैतिक मूल्यों पर आधारित थी। गाँधी जी ने अपने कर्म क्षेत्र में जिन नियमों का प्रतिपादन किया वे ही गाँधी जी का जीवन-दर्शन या गाँधीवाद कहे जाते हैं।

कर्मभूमि पर गाँधीवाद का प्रभाव :-

सत्य गाँधी जी की चिन्तन धारा की आधारशिला है। असहयोग, सविनय अवज्ञा, करबन्दी आदि सत्याग्रह के विविध रूप है। इन्हीं के संदर्भ में अब हम 'कर्मभूमि' पर गांधीवाद के प्रभाव का मूल्यांकन करेंगे।

① अछूतोद्धार एवं गाँधीवाद :-

कर्मभूमि में प्रेमचन्द ने पहली बार व्यापक स्तर पर अछूतोद्धार की समस्या को उठाया है। नगरीय कथा में अछूतोद्धार की समस्या उपन्यास के तीसरे भाग से आरम्भ होती है। लाला समरकांत, ब्रह्मचारी जैसे धर्म के ठेकेदार अछूतों के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। परन्तु लाला समरकान्त की पुत्रवधू सुखदा तथा पुत्र शांतिकुमार जैसे पात्र अन्त्यजों का नेतृत्व कर उनको मंदिर में प्रवेश करने का अधिकार दिला देते हैं।

प्रेमचन्द ने प्रवेशाधिकार के लिए जिस सामूहिक आंदोलन का चित्रण किया है वह पूर्णतः गांधी जी के सत्याग्रह से मिलता है।

② बुनियादी शिक्षा एवं गांधीवाद :-

गाँधी जी मानते थे कि शिक्षा से तात्पर्य मनुष्य के चहुँमुखी विकास से होना चाहिए। गाँधी जी ने अंग्रेजी की शिक्षा पध्दति में व्याप्त कमियों को दूर करने के लिए 'बुनियादी शिक्षा' के नाम से एक नई शिक्षा-प्रणाली देश के सम्मुख रखी जिसका ध्येय बच्चों का सर्वांगीण विकास करना था।

'कर्मभूमि' उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने गाँधी जी के विचारों से प्रभावित होकर ही

Generated by CamScanner

'सेवाश्रम' की स्थापना की। देश प्रेमी व समाज सुधारक प्रो० शांतिकुमार निर्धन बच्चों को उत्तम शिक्षा प्रदान कराने के लिए 'प्रेमाश्रम' की स्थापना करते हैं।

इसी प्रकार रैदासों की बस्ती में भी अमरकान्त जिस पाठशाला को चलाता है उसमें भी बच्चों के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया जाता है। इस उपन्यास में शिक्षा के क्षेत्र में जो प्रगति दिखाई देती है उस पर गाँधीवाद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

(3) स्वदेशी वस्तुओं व खादी प्रयोग:-

स्वदेशी-वस्तुओं व खादी प्रयोग गाँधीवाद के व्यवहारिक पक्ष में आता है। गाँधी जी ने देश की दरिद्रता और बेकारी का उन्मूलन खादी के प्रयोग और दूसरे खादी ग्रामोद्योगों के पुनरुद्धार के द्वारा करना चाहते थे। उन्होंने कांग्रेस का सदस्य बनने के लिए प्रतिदिन दो घंटे चरखे पर सूत कातने का नियम बना रखा था।

'कर्मभूमि' में प्रेमचन्द ने अमरकान्त के माध्यम से गाँधी जी के इन विचारों का पालन किया है धनी पिता का पुत्र होते हुए भी अमरकांत प्रतिदिन दो घंटे चरखा चलाता है।

(4) लगान बंदी आंदोलन:-

'कर्मभूमि' का लगान बंदी-आंदोलन भी महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए सविनय आंदोलन से प्रेरित है। अमरकांत आत्मानन्द के उग्र मार्ग पर चलने से ग्रामीणों को रोकता है क्योंकि उसे सविनय आंदोलन पर विश्वास है। वह जमींदार महंत के पास जाकर प्रार्थना-पत्र देता है।

(5) सत्याग्रह :- 'कर्मभूमि' के उपन्यासकार ने म्यूनिसिपैलिटी की भूमि के लिए चल रहे आन्दोलन को भी सत्याग्रह के नियमों से बँधा हुआ दिखाया है और इस सत्याग्रह का अन्त भी गाँधीवाद के अनुरूप ही होता है। सच्चा सत्याग्रही दूसरे के मत परिवर्तन पर बल देता है। इस उपन्यास में नैना के बलिदान से सेठ धनी राम का हृदय परिवर्तित होता है और वह म्यूनिसिपैलिटी के सदस्यों से आग्रह करता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

" अगर बोर्ड को मेरे साथ हमदर्दी है तो इसी वक्त मुझे यह अख्तियार दीजिए कि जाकर लोगों से कह दूं बोर्ड ने तुम्हें वह जमीन दे दी।"

(6) आध्यात्मिक जीवन दर्शन :- गाँधी जी अपने जीवन दर्शन में सेवा, प्रेम व त्याग को महत्व प्रदान करते है। उनका जीवन आदर्श है— प्राणिमात्र की निःस्वार्थ सेवा एवं त्यागमय सेवा। कर्मभूमि में भी प्रेमचन्द ने अनेक पात्रों के माध्यम से इस जीवन दर्शन का प्रतिपादन किया है।

(7) अहिंसा :- गाँधी दर्शन में 'अहिंसा' एक प्रमुख तत्व है। गांधी जी के अनुसार—

" अहिंसा वह भावात्मक प्रक्रिया और शक्ति है जो हमें प्राणीमात्र से प्रेम करने के लिए प्रेरित करती है।"

Generated by CamScanner

प्रेमचन्द जी ने महात्मा गाँधी जी के अहिंसा के मार्ग का अनुसरण किया है। 'कर्मभूमि' में सुखदा, प्रो० शांतिकुमार, अमरकान्त आदि पात्रों का अहिंसा के साथ आविर्भाव हुआ है।

(8) सत्य एवं प्रेमभाव :- गाँधी जी ने धर्म की व्याख्या करते हुए उसे 'सत्य' का नाम दिया है। उनका धर्म नीति धर्म है, किसी विशेष सम्प्रदाय का नहीं। सत्य गाँधी जी की चिन्तन धारा का आधारशिला है। प्रेमचन्द जी भी सत्य के पक्षधर थे। 'कर्मभूमि' में इन्होंने अपने मुख्य पात्रों से सत्य का आचरण करवाया है।

निष्कर्ष :- उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'कर्मभूमि' उपन्यास पर गाँधीवाद की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा, त्याग, सहिष्णुता आदि नैतिक मूल्य इस उपन्यास में दिखाई देते हैं जो महात्मा गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित थे।

Generated by CamScanner